

दां.प्रकी.(जमा.) 4453/2004

07.12.2004

माननीय न्यायाधिपति श्री कृष्ण कुमार

प्रार्थी के अधिवक्ता श्री जी.आर.पूनिया,
जन अभियोजक श्री अशोक उपाध्याय उपस्थित।

योग्य अभिभाषक अभियुक्त-प्रार्थी का तर्क है कि इस प्रकरण में अभियुक्त से तफ्तीश हो चुकी है। अभियुक्त न्यायिक हिरासत में है, मजिस्ट्रेट ट्रायल का प्रकरण है, अभियुक्त जमानत का दुरुपयोग नहीं करेगा न ही फरार होगा, अतः उसे जमानत पर रिहा किया जावे।

योग्य जन अभियोजक ने प्रार्थना-पत्र पर एतराज किया और तर्क किया कि मकान बनाने के लिए ठेके पर लिया गया है और मकान हडप लिया गया है, ऐसे गम्भीर प्रकरण में जमानत नहीं ली जावे।

मैंने दोनों पक्षों के तर्कों पर विचार किया। प्रकरण में आई परिस्थितियों को देखते हुए, बिना गुणावगुण पर राय दिए, चूंकि मजिस्ट्रेट ट्रायल का प्रकरण है, अभियुक्त-प्रार्थी को जमानत पर रिहा करने के मैं उचित आधार पाता हूं।

अतः यह प्रार्थना-पत्र स्वीकार किया जाता है और आदेश दिया जाता है कि यदि प्रार्थी राजू पुत्र हंगामी लाल योग्य विचारण न्यायालय के संतोषप्रद उनके न्यायालय में नियत तिथियों पर एवं जब भी उसे बुलाया जावे, उपस्थिति हेतु, बीस हजार रुपए का

बन्ध-पत्र एवं दस-दस हजार रूपए की दो प्रतिभूतियां प्रस्तुत करे तो उसे जमानत पर रिहा कर दिया जावे।

(न्यायाधिपति कृष्ण कुमार)

जी.एन.शर्मा